तत्त्वार्थसूत्र

परिचय - पुनरावर्तन

मूलसूत्र

हितोपदेशी वीतरागी

मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारं कर्मभूभृताम्।

ज्ञातारं विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

सर्वज्ञ प्रयोजन - भावना

श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥

अर्थ – [श्रुतम्] श्रुतज्ञान [मतिपूर्वं] मतिज्ञान पूर्वक होता है, अर्थात् मतिज्ञान के बाद होता है, वह श्रुतज्ञान [द्व्यनेकद्वादशभेदम्] दो, अनेक और बारह भेदवाला है।

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - उत्पत्ति का क्रम

- व्यजंनावग्रह → अव्यक्त ज्ञान → अर्थावग्रह → व्यक्त ज्ञान
- ईहा → अधिक जानने की इच्छा
- अवाय → निश्चय अथवा निर्णय
- धारणा → स्मरण
- श्रुतज्ञान → उत्तर तर्कणा [मन के अवलम्बन मतिज्ञान के द्वारा जाने हुए विषय के सम्बन्ध में विचार]

विशुद्धता की वृद्धि

अध्याय १: सूत्र २० - श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - मतिज्ञान और श्रुतज्ञान में अंतर

विषय	मतिज्ञान	श्रुतज्ञान
बहिरंग निमित्त	मन एवं इन्द्रिय	मन
अंतरंग निमित्त	मतिज्ञानावरणीय + वीर्यांतराय कर्म का क्षयोपशम	श्रुतज्ञानावरणीय + वीर्यांतराय कर्म का क्षयोपशम
ज्ञान का प्रकार	क्रमिकज्ञान	मुख्य-गौण ज्ञान
भेद-प्रभेद	नहीं जानता	जानता है
विशुद्धता	श्रुतज्ञान से कम	मतिज्ञान से ज्यादा
उहापोह	श्रुतज्ञान से कम	मतिज्ञान से ज्यादा
अनुभव	मतिपूर्वक श्रुतज्ञान	मतिपूर्वक श्रुतज्ञान

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - श्रुतज्ञान के भेद के प्रकार

- अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक
- भावश्रुत और द्रव्यश्रुत
- स्वार्थप्रमाण और परार्थप्रमाण

अध्याय १: सूत्र २० - श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - अक्षरात्मक और अनक्षरात्मक

- श्रुतज्ञान
  - अक्षरात्मक
    - वाचक [शब्द]
    - वाच्य [पदार्थ]
  - अनक्षरात्मक
    - पर्यायज्ञान [सबसे जघन्य ज्ञान]
    - पर्यायसमास [सबसे जघन्य ज्ञान से अधिक ज्ञान]

अध्याय १: सूत्र २० - श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

- श्रुतज्ञान
  - भावश्रुत
    - भावआगम
    - वाच्य [पदार्थ] = आत्मानुभूति
  - द्रव्यश्रुत [द्रव्यआगम = २ भेद]
    - अंगप्रविष्ट [१२ अंग = १२ भेद]
    - अंगबाह्य [१४ प्रकीर्णक = अनेक भेद]

अध्याय १: सूत्र २० - श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

द्रव्यश्रुत	अंगप्रविष्ट [१२ अंग] [1]	आचारांग, सूत्रकृतांग, स्थानांग, समवायांग, व्याख्या प्रज्ञप्ति अंग, ज्ञातृ धर्म कथा अंग, उपासकाध्ययनांग, अन्त:कृत दशांग, अनुत्तरौपपादिक दशांग, प्रश्न-व्याकरणांग, विपाक-सूत्रांग, दृष्टिवादांग
	अंगबाह्य [१४ प्रकीर्णक] [1]	सामायिक, चतुर्विंशति-स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, वैनयिक, कृति-कर्म, दश-वैकालिक, उत्तराध्ययन, कल्प्य व्यवहार, कल्प्याकल्प्य, महाकल्प्य, पुण्डरीक, महापुण्डरीक, निषिद्धिका

[1] पं. चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र २०।

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

दृष्टिवादांग [१]

- **परिकर्म** – चन्द्र प्रज्ञप्ति, सूर्य प्रज्ञप्ति, जम्बुद्वीप प्रज्ञप्ति, द्वीप-सागर प्रज्ञप्ति, व्याख्या प्रज्ञप्ति
- **सूत्र** – ८८,००,००० पदों द्वारा ३६३ मिथ्या-वादियों का कथन
- **प्रथमानुयोग** – ५,००० पदों द्वारा ६३ शलाका पुरुषों का वर्णन
- **पूर्वगत** – १४ पूर्व
- **चुलिका** – जलगता, थलगता, मायागता, रूपगाता, आकाशगता

[१] पं. चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र २०।

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

पूर्वगत [१४ पूर्व][१]

उत्पाद पूर्व, आग्रायणीय पूर्व, वीर्यानुवाद पूर्व, अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व, ज्ञान प्रवाद पूर्व, सत्य प्रवाद पूर्व, आत्म प्रवाद पूर्व, कर्मप्रवाद पूर्व, प्रत्याख्यान पूर्व, विद्यानुवाद पूर्व, कल्याणवाद पूर्व, प्राणावाद पूर्व, क्रियाविशाल पूर्व, त्रिलोक विन्दुसार

[१] पं. चेतनदासजी कृत तत्त्वार्थसार वचनिका का हिन्दी अनुवाद, अध्याय १ सूत्र २०।

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

प्रथम श्रुतस्कंध उदगमस्थान [२]

दूसरा आग्रायणीय पूर्व → ५वाँ वस्तु अधिकार → ४थाँ महाकर्म प्रकृति नामक प्राभृत

[२] सोनगढ़ से प्रकाशित समयसार का उपोदघात

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - भावश्रुत और द्रव्यश्रुत

द्वितीय श्रुतस्कंध उदगमस्थान [२]	पांचवाँ ज्ञानप्रवाद पूर्व → १०वाँ वस्तु अधिकार → ३रा समय नामक प्राभृत

[२] सोनगढ़ से प्रकाशित समयसार का उपोदघात

श्रुतं मतिपूर्वं द्व्यनेकद्वादशभेदम् ॥ २० ॥ - स्वार्थप्रमाण और परार्थप्रमाण

स्वार्थप्रमाण	परार्थप्रमाण
ज्ञानस्वरूप है	वचनरूप है
पांचों ज्ञान स्वार्थप्रमाण	श्रुतप्रमाण स्वार्थ-परार्थ - दोनों रूप है: इसलिए वह ज्ञानरूप और वचनरूप है
-	श्रुत उपादान है और वचन उसका निमित्त है
-	विकल्प का समावेश वचन में हो जाता है
-	श्रुतप्रमाण का अंश नय है

सूत्र ११ से २० तक का सिद्धान्त

- जीव को सम्यग्दर्शन होते ही सम्यक्मति और सम्यक्श्रुतज्ञान होता है।
- सम्यग्दर्शन कारण है और सम्यग्ज्ञान कार्य, ऐसा समझना चाहिए।
- यह जो सम्यक्मति और श्रुतज्ञान के भेद दिए गए हैं, वे ज्ञान की विशेष निर्मलता होने के लिये दिए गए हैं;

सूत्र ११ से २० तक का सिद्धान्त

- उन भेदों में अटककर राग में लगे रहने के लिए नहीं दिए गए हैं;
- इसलिए उन भेदों का स्वरूप जानकर जीव को अपने त्रैकालिक अखण्ड अभेद चैतन्यस्वभाव की ओर उन्मुख होकर निर्विकल्प होने की आवश्यकता है ॥२० ॥

तत्त्वार्थसूत्र

अध्याय १ सूत्र २०

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अब सम्यग्ज्ञान के भेद कहते हैं --	९	१
कौन से ज्ञान प्रमाण है ?	१०	१
परोक्ष एवं प्रत्यक्ष प्रमाण के भेद	११-१२	२
मतिज्ञान के दूसरे नाम	१३	१
मतिज्ञान की उत्पत्ति के समय निमित्त -	१४	१
मतिज्ञान के क्रम के भेद तथा उनका स्वरूप	१५-१९	५
श्रुतज्ञान का वर्णन, उत्पत्ति का क्रम तथा उसके भेद	२०	१

आगे की विषय-वस्तु....

विषय-वस्तु	सूत्र क्रमांक	कुल सूत्र
अवधिज्ञान का वर्णन	२१	१
क्षयोपशम निमित्तक अवधिज्ञान के भेद तथा उनके स्वामी	२२	१
मन:पर्ययज्ञान के भेद	२३	१
ऋजुमति और विपुलमति में अंतर	२४	१
अवधिज्ञान और मन:पर्ययज्ञान में विशेषता	२५	१
मति , श्रुत , अवधि , मन:पर्यय , केवलज्ञान का विषय	२६-२९	४
एक जीव के एक साथ कितने ज्ञान हो सकते हैं ?	३०	१

जिनवाणी स्तुति